ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

3-12-2024

बापदादा बच्चों को निरन्तर सच्चे सेवाधारी बनने के लिए कहते हैं, लेकिन अगर नाम सेवा हो और स्वयं भी डिस्टर्ब हो, दूसरे को भी डिस्टर्ब करे, ऐसी सेवा न करना अच्छा है क्योंकि सेवा का विशेष गुण सन्तुष्टता है। जहाँ सन्तुष्टता नहीं, चाहे स्वयं से, चाहे सम्पर्क वालों से, वह सेवा न स्वयं को फल की प्राप्ति करायेगी न दूसरों को। इससे स्वयं अपने को पहले सन्तुष्टमणी बनाए फिर सेवा में आओ तो अच्छा है। नहीं तो सूक्ष्म बोझ चढ़ता है और वह बोझ उड़ती कला में विघ्न रूप बन जाता है।

Be a jewel of contentment, always remain content and make everyone content.

BapDada tells you children to be constant servers. However, if you are disturbed by something called service and you are also disturbing others, it is better not to do that type of service, because the special virtue of service is contentment. Where there isn't contentment either with yourself or with those in connection with you, then that service will not enable you or others to receive the fruit. Instead, it is better to first of all make yourself into a jewel of contentment and then do service. Otherwise, the subtle burden increases and that burden becomes an obstacle to the flying stage.